।।ओ३म्।।

# वर्तमान परिपेक्ष में शिक्षा से ही देश की उन्नति संभव...

**शिवदेव आर्य**
**गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून**
**मो. 8810005096**
**ई.मल-shivdevaryagurukul@gmail.com**

सुहृद् पाठकवृन्द! हमने बहुशः पढ़ा व सुना है कि किसी भी राष्ट्र के उन्नयन अथवा अवनयन में वहाँ की शिक्षा पद्धति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अमेरिका जैसे देशों के विश्वमंच पर महाशक्ति के रूप में विद्यमान होने में भी वहाँ की शिक्षा पद्धति का महत्त्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान में हमारा देश अनेक जटिल समस्याओं से ग्रस्त हो रहा है। अतः इसका प्रमुख कारण हमारी दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति है। ऐसे समय में यदि देश को इन जटिलताओं से मुक्त करा सकती है तो वो है श्रेष्ठ शिक्षा पद्धति। क्योंकि शिक्षा में वो सामर्थ्य होता है जो देशहित को सर्वोपरि उदित करता है।

यह तथ्य हम सभी स्वीकार करते है कि देश के वर्तमान, भविष्य का प्रमुख आधार शिक्षा पद्धति एवं शिक्षित वर्ग ही होता है।

आज समाज में तथाकथित शिक्षित जन देश को दिशा व दशा देने वाले दृष्टिगत होते हैं पुनरपि हमारा देश समस्याओं के तिमिरान्धत्व में विचलित होता जा रहा है, आखिर क्यों? ऐसा क्या हुआ? आज शिक्षा की तो कोई कमी नहीं, हर प्रकार से उच्च से उच्च शिक्षा दी जा रही है।

तथाकथित उच्च शिक्षा को प्राप्त किये हुए नायक भी घोटाले, रिश्वतखोरी, बलात्कार जैसे अने क दोषों में लिप्त दिखायी देते हैं। इन सबको हम देखते है तो इस नतीजे पर पहूँचते है कि- कहीं-न-कहीं हमारी शिक्षा पद्धति (जो अधिकांश मैकाले की देन ही है )दोषपूर्ण है।यदि विचार करें विश्वगुरु भारत का तो हमारा ध्यान जाता है, उस प्राचीन युग पर जब हमारा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर था भले ही आज हमारे युवा विद्यार्थी विदेशों में पढ़ना गौरव व गुणवत्तपूर्ण समझते हा। वस्तुतः यह प्राचीन पद्धति का ही उत्कर्ष था कि उस समय समस्त विश्व में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र भारत ही था। जिसके कारण लोग कहा करते थे कि-

**एतत् देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।**
**स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।।**

दुर्भाग्यवश हमने उच्च आदर्श युक्त आर्ष शिक्षा पद्धति की अवमानना कर आधुनिकता के आवरण में एक ऐसी पद्धति को अपना लिया है, जो हमें हमारे आदर्शों से अवगत करा रही है, जो हमें हमारे मूल से पृथक् कर रही है।

आज आवश्यकता है कि हम अपनी आधुनिक शिक्षा योजनाओं में आर्ष शिक्षा के उच्चादर्शों का समावेश करें।

आर्ष शिक्षा वह है जो ऋषिकृत शिक्षा पद्धति है (ऋषिणा प्रोक्तमार्षम्)। अनार्ष शिक्षा (आधुनिक शिक्षा) वह है जो आज विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में प्रदान कराई जा रही है। आर्ष शिक्षा में नैतिकमूल्यों के उन पहलुआ को उद्धृत किया गया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति निजी तुच्छ स्वार्थों को छोड़कर देशहित में अपने हित को समझते हुए कार्य करने की भावना को दर्शाया गया है। जहाँ देशहित, व्यवहारिक तथा नैतिकमूल्यों की शिक्षा प्रदान कराई जाती है परन्तु आज की शिक्षा में ये दृष्टिपात नहीं हो पा रहा है। आज की शिक्षा पद्धति को व्यक्ति धन कमाने का द्वार मानता है। ये भी गलत नहीं है कि हम धन न कमायें। धन कमाना चाहिए, क्योंकि धन कमाना भी शिक्षा का उद्देश्य ही है परन्तु उस धन को गलत तरीकों से नहीं कमाना चाहिए। आज लोग लाखों-लाखों रूपये देकर एम.बी.ए., एम.बी.बी.एस. आदि डिग्रियों को प्राप्त कर लाखों रूपये की घूस देकर नौकरी को प्राप्त करते हैं और नौकरी प्राप्त करने के बाद जो पैसा उन्होंने नौकरी को प्राप्त करने में लगाया है उसे सर्व प्रथम निकालते हैं। चाहे उस समय अधर्म हो रहा हा या धर्म हो रहा हो, उसकी उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती।

आज एक स्कूल में अध्यापकों का उद्देश्य शिक्षा देना नहीं होता उनका उद्देश्य तो पैसा कमाना होता है। महीना पूरा हुआ कि उनको अपने वेतन की चिन्ता होने लगती है। छात्र भी लाखों रूपये देकर शिक्षा का प्राप्त करते है इससे इनके अन्तःकरण में भी ये भाव उत्पन्न हो जाते है कि हमने तो बहुत-सा धन खर्च कर शिक्षा को प्राप्त किया है तो मेरा प्रथम लक्ष्य धन कमाना ही होगा न कि शिक्षा देना। परन्तु आर्ष शिक्षा पद्धति को दृष्टिगत करें तो ज्ञात होता है कि आर्ष शिक्षा पद्धति में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करने व कराने का विधान है, इसीलिए उनका उद्देश्य केवल मात्र विद्या की उन्नति ही होता है। ऋषि लोग मन्त्रद्रष्टा होते हैं, वो आर्ष-शिक्षा पद्धति के माध्यम से **सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय** की भावना को प्रस्तुत करते हैं।

हमें आधुनिक शिक्षा पद्धति को भी छोड़ने की आवश्यकता नहीं है अपितु उस शिक्षा व्यवस्था में जो दोष हैं, उनको हटा कर आर्ष शिक्षा पद्धति के मन्तव्यों को स्वीकार करना पड़ेगा, जो उन्नति के उच्च शिखर को स्थापित करते हो।

यदि हम राष्ट्र निर्माण चाहते है तो निश्चित है आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में आर्ष शिक्षा को समाहित करना ही होगा तभी जाकर राष्ट्रनिर्माण सम्भव हो सकेगा। अन्तिम निर्णायक तो आप सभी पाठक ही हैं। आप अपने सझावों का प्रषित करें, आपके सुझावों की प्रतिक्षा में.....

**शिवदेव आर्य**

**गुरुकुल-पौन्धा, देहरादून**